गुरु नानकदेव



गुरु नानकदेव

प्राणनाथ वानप्रस्थी



शिक्षा भारती

मूल्य : ₹ 30/- (तीस रुपये)

संस्करण : 2012
ISBN : 978-81-7483-052-4
GURU NANAKDEV (Life-Sketch) by Pran Nath Vanprasthi
Printed at K.H.B Offset Process, Delhi

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

जन्म

'आचारः परमो धर्मः'–मानव का यदि कोई परम धर्म है, तो वह है सदाचारी होना। जिसकी इन्द्रियां अपने वश में हैं, जो सब प्राणियों को अपने जैसा समझता है और उनकी भलाई में लगा हुआ है, जिसने काम, क्रोध, मोह जीता हुआ है और जो दूसरे के धन को तिनके की तरह समझता है, ऐसा मनुष्य संसार में धन्य है। आज आपको एक ऐसे ही महापुरुष की कहानी सुनाता हूं।

पांच सौ वर्ष हुए पंजाब में तलवंडी नामक स्थान में कार्तिक पूर्णिमा संवत् 1526 (15 अप्रैल सन् 1469) को आधी रात के समय कालूचन्द पटवारी के घर पुत्र हुआ। इस बालक की माता का नाम तृप्ता जी था। वह क्षत्रिय कुल बेदी वंश के नाम से प्रसिद्ध था। कहते हैं, श्री रामचन्द्र जी के पुत्र लव के ये वंशज हैं। आजकल तलवंडी का नाम बदलकर ननकाना साहिब हो गया है।

घर में बधाइयां होने लगीं। पंडित हरदयाल जी ने बालक की जन्मपत्री बनाई और कहा, 'तुम्हारा पुत्र संसार में धर्म का नाद गुंजाएगा। हिन्दू और मुसलमान सभी उसकी पूजा करेंगे। वह भगवान का सच्चा भक्त होगा।' बालक का नाम नानकदेव रखा गया।

बालक पांच वर्ष का हो गया। वह अपने साथियों के साथ खेलने लगा। होनहार बालकों के खेल भी निराले होते हैं। खेलते समय वे आसन लगाकर बैठ जाते और आंखें बन्द कर भगवान का ध्यान करते। अपने दूसरे साथियों से भी ऐसा करवाते। इस छोटी आयु में भी वे घर की चीज़ें उठाकर गरीबों और साधुओं को देते थे।

शिक्षा

सात वर्ष की आयु होने पर पिता कालूचन्द केसर और मिठाई लेकर, अपने पुत्र को साथ ले पंडित जी के पास पहुंचे और उनकी पढ़ाई शुरू करा दी।

पंडित जी ने नानक को पट्टी लिखकर दी, परन्तु उन्होंने कुछ भी न लिखा। इसपर पंडित जी ने पूछा, 'भाई! लिखते





क्यों नहीं?' नानक ने कहा, 'पंडित जी! कागज़-कलम लेकर परमेश्वर का नाम लिखो। जिसका कोई अन्त नहीं पा सकता। उसको भूलकर मनुष्य मोह-जाल में फंसकर अपना नाश कर लेता है। पंडित जी प्रभु के भय से मेरा शरीर कांप रहा है, क्योंकि अन्त में सब नष्ट हो जाना है।'

पंडित जी ने बालक की बातें सुनीं और चकित रह गए। फिर भी नानक जी ने कुछ समय तक पढ़ाई की। कभी-कभी जब आप घर पर रहते तो समाधि में खो जाते। माता, पिता, भाई, बन्धु, पड़ोसी—सभी आश्चर्य में डूब जाते। जो कोई मनुष्य नानक जी के सामने भजन गाता, तो वे बड़े प्रसन्न होते।

कुछ समय पाकर पिता कालू ने पुत्र को मौलवी के पास फारसी पढ़ने भेजा। यहां भी बालक नानक ने मौलवी जी को कहा, 'मुझे वही पढ़ाइए जिससे भगवान का भजन बने। मृत्यु से छुटकारा नहीं होगा। उस समय कोई भी सम्बन्धी या मित्र सहायता न कर सकेगा। उस समय भगवान का भजन ही साथ देगा। मैं चाहता हूं कि संसार के भले में अपना जीवन बिताऊं।'

यह सुनकर मौलवी की आंखें खुल गईं। वह उनके चरणों में गिर पड़ा। उसके जीवन में एकाएक परिवर्तन आ



गया। वह दिन-रात भगवान के भजन में मगन होने लगा। यहां भी नानक जी ने कुछ समय पढ़ाई की।

जनेऊ-संस्कार

जब नानक जी 9 वर्ष के हुए तो पिता ने पंडित को बुलाकर यज्ञोपवीत-संस्कार की सोची। सब संबंधी और मित्र बुलाए गए। वेद की रीति के अनुसार यज्ञ किया गया। जब नानक जी को जनेऊ पहनाने लगे तो वे बोले–

दया कपाह संतोष सूत, जत गंढी सत वट्ट;
एह जनेऊ जीय का, है तां पांडे धत्त।
न एह टुट्टे न मल लग्गे, न एह जले न जाई;
धन्य सु माणस नानका, जो गल चल्ले पाइ।

–आसा की वार

अर्थ–दया की कपास बनाकर संतोष का सूत बनाए। उस सूत को सत्य-रूपी लपेट चढ़ाकर संयम से संस्कार कर उसे पहने। यदि ऐसा जनेऊ है तो मुझे पहनाइए। जो न टूटे, न मैला हो, न जले और न जाए। नानक! वही मनुष्य संसार में धन्य है जिसने इस बात का भेद पा लिया है।

सब लोगों ने बालक के विचार सुनकर दांतों तले अंगुली दबाई और उसको नमस्कार कर अपने-अपने घरों को लौट गए।

अब नानक जी गौएं और भैंसे चराने लगे। एक दिन नानक जी एक वृक्ष के नीचे बैठ गए और प्रभु का भजन करते-करते समाधि लग गई। उधर पशु चरते-चरते किसी दूसरे के खेत में चले गए। पशुओं ने खेत चर डाला। उस खेत वाले ने वहां के शासक रायबुलार को जा शिकायत की। उसने नानक और उनके पिता को बुलाया और कहा कि खेत वाले की जो हानि हुई है, उसका मूल्य उसे भर दें। इसपर नानक ने कहा, 'महाराज! खेत बिलकुल वैसा ही है, आप चाहें तो सेवक भेजकर पता लगा लें।'

उसी समय सेवक भेजे गए और उन्होंने जाकर देखा कि खेत बिलकुल हरा-भरा है। उसके खेल वही जाने। जो सर्वशक्तिमान पिता सारे संसार को पल-भर में बना और मिटा सकता है, भला वह अपने सच्चे भक्तों की रखवाली क्यों न करेगा!

शासक ने खेत वाले को डांटा और वह अपना-सा मुंह लेकर रह गया।

उसी वर्ष एक बार नानक जी गौएं चराते-चराते दूर

निकल गए और बहुत धूप निकल आई। वे थक-कर लेट गए, तो एक फनियर सांप ने आकर उनपर छाया कर दी। उसी राह पर रायबुलार कहीं जा रहा था। उसने दूर से देखा तो भागकर बालक की रक्षा को आ पहुंचा। उसे पास आया देख सांप धीरे-धीरे लौट गया। रायबुलार ने देखा कि बालक गहरी निद्रा में है। उसने उस महान बालक को नमस्कार किया और घर लौट गया।



इसी तरह से एक दिन नानक जी एक वृक्ष के नीचे सो रहे थे कि सोते-सोते बहुत समय बीत गया और दिन ढल गया, परन्तु नानक जी के ऊपर उसी तरह छाया बनी रही। लोगों ने देखा कि दूसरे सभी वृक्षों की छाया पलट

गई है, परन्तु जिस वृक्ष के नीचे नानक जी सो रहे हैं, उसकी छाया नहीं पलटी। लोगों ने कण-कण में बसने वाले भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया।

सच्चा व्यापारी

उन दिनों नानक जी दिन-रात भगवान के भजन में मग्न रहने लगे। यहां तक कि उन्हें खाने-पाने की भी सुध न रहती। घरवालों ने समझा कि वे रोगी हो गए हैं। एक वैद्य को बुलाकर उन्हें दिखाया गया, तब नानक जी ने प्रवचन किया–

वैद बुलाया वैदगी, पकड़ ढंढोले बांह।
भोला वैद न जानइ, करक कलेजे माँह॥

अर्थ–इलाज के लिए वैद्य बुलाया है, जो नाड़ी देखता है। भोला वैद्य क्या जाने कि पीड़ा तो हृदय में है।

अपना-सा मुंह लेकर वैद्य लौट गया।

अब पिता को चिन्ता हुई कि यदि पुत्र कोई व्यापार न सीखेगा तो बड़ा होकर क्या करेगा। उसने नानक को बुलाकर बीस रुपये दिए और कहा, 'पुत्र! भाई बाला के साथ तुम लाहौर जाओ और कोई सच्चा व्यापार करो।'

पुत्र पिता की आज्ञा पाकर भाई बाला को साथ लेकर चल पड़ा। जब चलते-चलते बारह कोस मार्ग तय कर लिया और चूहड़काने के पास जा पहुंचे तो नानक जी ने देखा कि कई साधु भूखे-प्यासे तपस्या कर रहे हैं। नानक जी ने अपने साथी से कहा, 'भाई बाला! पिता जी ने सच्चा व्यापार करने को कहा है ना, देखो इससे सच्चा व्यापार और क्या होगा कि इन भगवान का भजन करनेवाले महात्माओं को भोजन कराया जाए।' भाई बाला क्या कहता! नानक जी ने पास वाले गांव से बीस रुपये का आटा, दाल और दूसरी खाने-पीने की वस्तुएं मंगाकर महात्माओं को भेंट कर दीं। महात्माओं ने नानक को बहुत-बहुत आशीषें दीं।



रुपये तो चुक गए थे, अब आगे जाकर क्या करते, इसलिए नानक जी वापस तलवंडी लौट आए। पिता ने नानक को बहुत मारा-पीटा। बहिन नानकी ने बीच में पड़कर भाई को बचाया।

नानक जी के पिटने की बात सुन वहां के शासक रायबुलार को बड़ा क्रोध आया। उसने कालू को बुलाया और कहा, 'तुम नहीं समझते भाई! तुम्हारा पुत्र भगवान का रूप है। वह औरों की तरह नहीं है। वह तो संसार में सच्चाई का प्रचार करने आया है, उसका जीवन घरेलू धन्धों के लिए नहीं है। जितना भी तुमने आज तक उसपर व्यय किया है, सो सब मुझसे ले लो, परन्तु देखो उसे कभी कुछ न कहना। उसे भगवान भजन का आनन्द लूटने दो।'

यह सुनकर कालू हाथ जोड़कर बोला, 'महाराज! मैं रुपये तो नहीं ले सकता। आगे से आपकी बात का ध्यान रखूंगा।'

जब रायबुलार ने देखा कि कालू फिर भी नहीं बदला, तो उसने एक बार बहिन नानकी के पति जयराम को बुलाया और कहा, 'भाई! मैं मुसलमान हूं, इसलिए नानक को अपने घर नहीं रख सकता। कालू उसे बड़ा दुःख देता है, तुम उसे अपने साथ ले जाओ।'

कुछ समय पाकर जयराम अपने ससुर को समझा-बुझाकर नानक जी को अपने साथ सुलतानपुर ले गया।

विवाह और मोदीखाना

सोलह वर्ष की आयु में नानक जी ने मोदीखाने (सरकारी अनाज की दुकान) का कार्य शुरू किया। भाई बाला इनके साथ ही रहा। नानक जी ने इस धन्धे को बड़े अच्छे ढंग से निभाया। इधर इनके पिता कालू ने जब नानक जी का यश सुना तो वह फूला न समाया। वह पुत्र से मिलने सुलतानपुर पहुंचा। पिता को आया देख नानक ने उसके चरण पकड़ लिए। पिता ने आशीर्वाद दिया और पूछा, 'क्यों पुत्र, कुछ धन कमाया भी है?' पुत्र ने कहा, 'पूज्य पिताजी! मैंने बहुत-कुछ कमाया और बहुत-कुछ गंवाया है, परन्तु मेरे पास कुछ नहीं है।' यह सुन पिता को बड़ा क्रोध आया जिससे उसका शरीर कांपने लगा परन्तु नानक जी शांत बैठे रहे।

जब पिता कालू अपनी पुत्री नानकी से मिले तो उसने समझाया, 'आपको प्रसन्न होना चाहिए कि नानक

व्यापार कर रहा है। वह जो धन कमाता है दुखियों और दरिद्रों में बांट देता है। साधु-सन्तों की संगति में बैठता है। यह तो हम लोगों के बड़े भाग्य हैं कि नानक के ऐसे उत्तम विचार हैं।'

18 वर्ष की आयु में नानक जी का विवाह परवोकी के मूलचन्द जी की सुपुत्री सुलक्षणी देवी के साथ हुआ।

इधर नानक जी खुले हाथों दान दिया करते थे। इनके द्वार से कोई खाली हाथ न लौटता था। लोगों ने समझा कि नानक मोदीखाना लुटा रहा है। यह शिकायत जयराम जी और नवाब के पास पहुंची। नवाब की आज्ञा से मोदीखाने की जांच हुई। लोगों के आश्चर्य का पार न रहा, जब नानक जी के ही 321 रुपये नवाब की ओर निकले। सच बात तो यह है कि दूसरों के दुःख मिटानेवाले को कभी कमी नहीं होती, बल्कि उसका धन दिन दुगुना रात चौगुना बढ़ता चला जाता है। बन्धुओ! विश्वास न हो तो अनुभव करके देख लो। हाथ कंगन को आरसी क्या!

हम प्रतिदिन देखते हैं कि यदि कोई पुरुष किसी राजा का भक्त बन जाता है तो वह राजा अपनी शक्तिभर उसे सुखी रखता है और उसकी रक्षा करता है। मेरे देश के होनहार बच्चो! ज़रा सोचो कि वह सम्राटों का सम्राट जो सर्वशक्तिमान

है, जो संसार-भर के अनन्त सुखों का भंडार है, क्या वह कभी अपने भक्त को कठिनाई में देख सकता है! वह तो सुख की वर्षा सब पर करता है, पर लूटते भाग्यवाले ही हैं। उसकी मित्रता वही पाते हैं जो सच्चे हृदय से उसको पाने के लिए तड़प उठते हैं, जो नाशवान संसार से मुंह मोड़कर दिन-रात उसीके भजन में छके रहते हैं।

हमारे नानक जी उस प्रभु के सच्चे दीवाने थे। एक बार अनाज तोलते समय एक, दो, तीन, चार करते-करते जब तेरह पर पहुंचे तो वे अपनी सुध-बुध खो बैठे—तेरा, तेरा, तेरा ही करते रह गए। ऐसे सच्चे प्रेमी थे वे!

नानक जी कई-कई दिन तक घर न जाकर सन्तों की संगति का ही आनन्द लूटा करते थे। इससे उनकी पत्नी दुःखी रहा करती थीं। एक दिन बहिन नानकी ने बड़ी नम्रता से भाई को समझाया, 'भैया! अब तुम घर-बार वाले बन गए हो, घर पर रहना चाहिए और सन्तान होनी चाहिए।'

बहिन की बात मानकर नानक जी घर पर रहने लगे। इनके दो पुत्र हुए श्रीचन्द और लक्ष्मीदास। बड़े पुत्र तो साधु बने और छोटे गृहस्थ।

गृह-त्याग

इन दिनों आप प्रतिदिन नदी में स्नान करते थे। एक दिन आपने नदी में डुबकी लगाई, जल के भीतर ही आप पद्मासन लगाकर बैठ गए। घरवालों ने और गांववालों ने बहुत देर तक राह देखी, जब वे न लौटे तो लोगों ने समझा कि नानक जी ने मोदीखाने का बहुत धन लुटा दिया है, इस भय से वे कहीं चले गए हैं। लोगों ने जाकर नवाब के कान भरे।

नानक जी के लौटने पर नवाब ने मोदीखाने की जांच कराई। जांच हुई तो नानक जी के 760 रुपये नवाब की ओर निकले। नानक जी ने उसी समय नवाब को कहा कि मुझे काम-धंधा करते बहुत दिन हो गए। बारह वर्ष इस धंधे में खो दिए हैं। अब तो मैं भगवान का भजन करूंगा। आप 760 रुपया दुखी दरिद्रों में बांट दें।

यह कहकर नानक जी नगर से बाहर श्मशान-भूमि में जा बैठे। इस समय इनके बड़े पुत्र की आयु साढ़े चार वर्ष की थी और छोटे का जन्म होने वाला था।

नवाब ने कई बार सेवक को भेजा कि नानक को बुला लाओ। एक दिन नानक जी आ निकले ओर नवाब से बोले,

'अव मैं तुम्हारा सेवक नहीं हूं जो तुम्हारे कहने के अनुसार काम करूं। अब तो मैं भगवान की सेवा में हूं।'

इसपर नवाब ने कहा, 'अच्छा, तो आप मेरे साथ चलकर मस्जिद में नमाज़ पढ़िए। नानक जी चल पड़े। उधर हिन्दुओं में हाहाकार मच गया कि आज नानक को क्या हो गया!

मस्जिद में जाकर नानक जी भी खड़े हो गए। सबने नमाज़ पढ़ी, पर नानक जी अपने स्थान से हिले भी नहीं। यह देख नवाब ने पूछा, 'आपने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी?' वे बोले, 'यदि आप भगवान का भजन करते, तो मैं भी नमाज़ पढ़ता, परन्तु आपका मन तो कंधार देश में घोड़े खरीद रहा था।' यह सुन नवाब चकित रह गया और नानक जी को नमस्कार कर अपने घर चला गया।

पवित्र कमाई

इन्हीं दिनों पिता कालू ने अपने गांव के मिरासी[1] मरदाना को नानक जी का पता लेने भेजा। वह तो उस सन्त के

---

1. पंजाबी में 'मिरासी' उन लोगों को कहते हैं जो गाने-बजाने का काम करते हैं। ये प्रायः मुसलमान ही होते हैं।

दर्शन करते ही सब भूल गया और उनके साथ चल पड़ा। नानक जी ने उसको कहा, 'भाई! बहिन नानकी से रुपये लेकर कहीं से रबाब खरीद लाओ।'

मरदाना वहां से चलकर बहिन नानकी के पास पहुंचा। उसने रुपये दे दिए, परन्तु वह भाई के दर्शनों के लिए व्याकुल हो गई। नानक जी उसको जाकर मिले और धैर्य देकर लौट आए।

इस बीच मरदाना भी रबाब ले आया। अब नानक



जी भाई बाला और मरदाना को साथ लेकर चल पड़े। भाई बाला और मरदाना आयु-भर नानक जी के साथ रहे। जब नानक जी भजन गाते और मरदाना रबाब बजाता, तो पशु-पक्षी तक अपने-आपको भूल जाते और एकटक निहारते रहते। धन्य हैं वे लोग जिन्हें ऐसे सच्चे सन्तों के दर्शन और उनकी पवित्र वाणी से भगवान के भजन सुनने को मिलते हैं।

नानक जी यहां से चलकर सात दिन में ऐमनाबाद पंहुचे और लालू बढ़ई के घर ठहरे। उसने बड़े प्रेम से भोजन बनाया और खिलाया। नानक जी अपने साथियों-सहित दिन-भर तो जंगल में रहते और रात होने पर लालू के घर आ जाते।

एक दिन यहां के एक धनिक मलक ने सब लोगों को भोजन का निमंत्रण दिया। नानक जी के पास भी निमंत्रण पहुंचा। उन्होंने नहीं माना। इसपर उस धनी को बड़ा क्रोध आया और उसने नानक जी को बुलवाया। उनके आने पर उसने कड़ककर कहा, 'क्या कारण है, जो आप बढ़ई का भोजन तो कर लेते हैं, परन्तु मेरा बढ़िया भोजन नहीं करते?'

इसी बीच लालू भी खाना लेकर आ गया नानक जी ने एक हाथ में लालू की रोटी और दूसरे हाथ में मलक की रोटी दबाई। लोगों के आश्चर्य का पार न रहा जब

लालू की रोटी से दूध की बूंदें और मलक की रोटी से रक्त की बूंदें टपक पड़ीं। नानक जी ने मलक को बताया कि तुम्हारा भोजन लोगों का रक्त चूस-चूसकर बनाया गया है और लालू का भोजन पवित्र कमाई का है।

यहां नानक जी ने सबको उपदेश दिया, 'भाइयो परिश्रम करके सच्ची कमाई करो। ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा को छोड़कर शुद्ध हृदय से भगवान का भजन करो आए-गए साधु-सन्त की सेवा करो।'

मक्का-मदीना की यात्रा

नानक जी की जन्मभूमि का हाकिम रायबुलार बूढ़ा हो चला था। उसने नानक जी के दर्शनों की इच्छा की। चलते-चलते नानक जी तलवंडी जा पहुंचे और उसे दर्शन देकर निहाल कर दिया। उसने बड़ी श्रद्धा से ब्राह्मणों द्वारा भोजन बनवाकर नानक जी को कराया। यहां इनके माता-पिता, चाचा और सभी सम्बन्धी मिलने आए। यह संवत् 1555 की घटना है।

नानक जी ने अपने साथियों-सहित यहां से चल-कर बंगाल देश और कई द्वीपों की यात्रा की। कई-कई दिन

तक आप वनों में ही रहते। नानक जी और भाई बाला तो सन्तोषी थे, परन्तु मरदाना को भूख-प्यास बहुत सताती थी।

नानक जी संसारी लोगों को उपदेशों से निहाल करते रहे। आप जहां भी जाते, लोग आपके दर्शनों को उमड़ पड़ते और आपकी अमृत-भरी वाणी सुनते थकते ही नहीं थे। इस तरह आपने सहस्त्रों लोगों का उद्धार किया।

एक दिन मरदाना ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, 'महात्मन! लोग मक्का-मदीना के बहुत गुण गाते हैं, वह स्थान किधर है?'

नानक जी बोले, 'भाई मरदाना! वह स्थान यहां से बहुत दूर है। तुम्हारी इच्छा है तो चलो, वहीं चलें।'

चलते-चलते नानक जी और उनके साथी मक्का जा पहुंचे। मक्का के दर्शन कर आप मदीना गए। रात्रि होने पर गुरु नानकदेव जी पवित्र स्थान की ओर पांव करके लेट गए। किसी मौलवी ने आकर देखा तो वह क्रोध में भरकर बोला, 'तुम कौन हो, जो रसूल की ओर पांव करके सो रहे हो ?' नानक जी बोले, 'भाई! दूर से आए हैं, थके हुए हैं। जिधर को ठीक समझते हो, उसी ओर हमारे पांव कर दो ना' उस मौलवी ने नानक जी को दोनों टांगों से पकड़कर घसीटना शुरू किया। उसकी आंखों ने क्या देखा कि जिस दिशा में भी वह नानक जी के पांव करता पवित्र स्थान उसी ओर घूम

जाता। वह कांप गया और भागा-भागा बड़े मौलवी के पास आया और जो कुछ देखा था, सब बता दिया।

यह सुनकर सभी बड़े-बड़े लोग इकट्ठे होकर नानक जी की सेवा में पहुंचे। बड़े आदर से दोनों हाथ जोड़कर बड़े मौलवी ने कहा, 'सन्त जी! आप भीतर चलकर विश्राम कीजिए। और हमारी सेवा स्वीकार कीजिए।' नानक जी ने उसकी बात मान ली।

उन सब लोगों के बहुत कहने पर नानक जी ने उपदेश दिया–

'भाइयो! भगवान सब जगह व्यापक है। कोई स्थान उससे खाली नहीं। एक-एक फल, फूल और पत्ते की बनावट तो देखो! उस कारीगर ने कितनी सुन्दरता से रंग भरे हैं! ज़रा अनार का छिलका उतार कर तो देखो, कैसे मोतियों की तरह जड़े हुए दाने हैं! केले को तो देखो, उसके भीतर कैसा अमृत भरा पड़ा है! सेब तो चखो, कैसा बढ़िया शहद जैसा रस भरा पड़ा है! उसकी रचना के कहां तक गुण गाएं। वह बिना आंखोंवाला, बिना हाथोंवाला, बिना पांवोंवाला संसार के सभी कार्यों को क्या ही अच्छी तरह निभाता है! उसके न्याय में रत्ती-भर भूल नहीं होती।

'भाइयो! यदि अपना भला चाहते हो, तो संसार की

वस्तुओं की चाह छोड़ दो। उस घट-घट में बसने वाले को सच्चे हृदय से खोजो जिसने दिन और रात बनाए हैं। दिन के उजाले में तो खूब काम करो और रात के अंधेरे में, चांद के शीतल प्रकाश में तारों की जगमगाहट के नीचे जी भरके सोओ।'

इस तरह नानक जी मुस्लिम देशों में धर्म का बीज बोते हुए पर्वतीय मार्ग से लौट आए।



भागीरथी के तट पर

सहस्त्रों लोगों को धर्म का उपदेश देते हुए आप हरिद्वार पहुँचे। हर की पौड़ी पर, जहां और लोग स्नान कर रहे थे, आप भी नहाने लगे। प्रातःकाल का समय था। सूर्य की

लाली आकाश में छा रही थी। धीरे-धीरे किरणें निकल पड़ीं। ऐसा दिखाई देता था मानों चारों ओर सिन्दूर लुटाया जा रहा हो। यदि ऐसे समय में आकाश में छुटपुट बादल हों, तो सोने पर सुहागा। एक ओर हरे, पीले, नीले, लाल, गुलाबी रंगों में इन्द्रधनुष उस निराले माली की कला दिखा रहा है। शीत ऋतु में तो इसका अनोखा ही आनन्द होता है।[1] इस सौन्दर्य का वर्णन लेखनी की शक्ति से बाहर की बात है। जो लोग दिन चढ़ने पर भी ख़र्राटे भरते रहते हैं और लिहाफ में मुंह ढककर सोये रहते हैं, वे इस आनन्द को क्या जानें! इस अनुपम आनन्द को तो भाग्यशाली ही लूटते हैं, जो इस पवित्र घड़ी में नदियों के तटों पर, सागर' के किनारों पर, पर्वतों की चोटियों पर झूम-झूमकर जगत्पिता

1. आश्विन से लेकर चैत्र मास तक यदि उदय होते सूर्य की किरणें आंखों पर ली जाएं, तो यह जन्म-जन्म की आंखों की दुर्बलता को मिटा देता है। मैं बचपन में दो दो ऐनकें लगाता था। इस अभ्यास से ऐनकें कभी की छूट गईं। इसका ढंग यह है कि नहा-धोकर वायु-सेवन कीजिए। फिर जल के किनारे या किसी ऊंचे स्थान पर चले जाइए। सूर्योदय से आधा घण्टा पहले जाइए। पूर्व की ओर मुख करके आंखें खोलकर बैठ जाइए। इसी बीच प्रसन्न मन से ऊंचे स्वर में भजन कीजिए, प्रणव पवित्र 'ओं' का जाप कीजिए। जब सूर्य के गोले का कोना दिखाई दे, उसी समय आंखें बन्द कर लीजिए और धीरे-धीरे मस्तक को घुमाते रहिए। जब आंखों में या माथे में कुछ गरमी या भारीपन मालूम हो तो घर लौट जाइए। लाल मिर्च या खटाई न खाएं। मोतिया आदि के रोगी यह अभ्यास न करें।

के गुण गाते हैं। कुछ दिन इस मस्ती का मुझे भी अनुभव हुआ था। उन दिनों ऐसा लगता था मानो कुबेर का कोष पा लिया हो। दिन-भर खिला-खिला रहता था। भूमि पर पांव ही नहीं पड़ते थे।

हां, तो उस समय गंगा के तट पर नानक जी ने क्या देखा कि कुछ लोग सूर्य की ओर मुंह करके जल फेंक रहे हैं, तो उस महात्मा ने भी दूसरी ओर दोनों हाथों से भर-भरकर जल फेंकना शुरू कर दिया। किसीने पूछा, आप क्या कर रहे हैं?' नानक जी बोले, 'आप क्या कर रहे हैं?' वह पुरुष बोला, 'मैं तो अपने पितरों को जल दे रहा हूं।' नानक जी ने कहा, 'मैं अपने खेतों में जल दे रहा हूं।' तो पुरुष ने फिर पूछा, 'यह जल खेत में कैसे जाएगा?' आप बोले, 'जैसे तुम्हारा जल पितरों के पास पहुंच जाएगा, वैसे मेरा जल भी खेत में पहुंच जाएगा।'

यह सुनकर वह पुरुष लज्जित हो गया। और भी बहुत-से लोग इकट्ठे हो गए। सबने मिलकर नानक जी से प्रार्थना की, 'सन्त जी! हमें सच्ची राह बताइए।' गुरु नानकदेव जी बोले, "भाइयो! सच्चे मन से भगवान का भजन करो, संयम से जीवन बिताओ। परिश्रम करके सच्ची

कमाई करो। भूलकर भी झूठ मत बोलो। इस तरह करते-करते पाप धुल जाते हैं।'

गुरु नानकदेव जी का अमृत भरा उपदेश पाकर लोग उनके चरणों में आ गिरे और उनसे भोजन के लिए प्रार्थना की। आज्ञा मिलने पर भोजन बना। नानक जी भोजन करने गए तो देखा कि रसोई में लकीरें पड़ी हुई हैं। नानक जी के पूछने पर लोगों ने बताया कि चौका अपवित्र न हो जाए, इसलिए ऐसा किया है।

गुरु नानक जी ने उन्हें कहा कि कुबुद्धि, परनिन्दा और क्रोधरूपी चांडाल ने तो पहले आपकी रसोई को अपवित्र कर दिया है। सच्चे सन्त की कल्याणभरी वाणी सुनकर लोगों ने चौके का झंझट छोड़ दिया और उनके शिष्य बन गए।

भूमिया चोर

श्री गुरु नानकदेव जी भाई बाला और मरदाना के साथ धर्म-उपदेश देते हुए अयोध्या, प्रयाग होते हुए ढाका में जा विराजे। यहां एक जमींदार रहता था जिसका नाम था भूमिया। वह दिन में डाके मारता और रात में चोरी करता



था। आए-गए साधु-सन्त को भोजन भी कराता था। उसका भोजन-भंडार हर समय खुला रहता था।

नानक जी भी अपने साथियों-सहित भूमिया के गृह पर जा पहुंचे। उसने बड़ी नम्रता से भोजन करने को कहा। महात्मा ने पूछा, 'भाई! तुम जो इतना बड़ा भंडार चलाते हो, तुम कौन-सा काम-धन्धा करते हो?'

नानक जी के मनोहर मुखड़े को देखकर उसकी बुद्धि निर्मल हो गई थी। उसने चरण पकड़कर सब सच-सच बता दिया। नानक जी ने कहा, 'भाई! हम तुम्हारा भोजन तभी करेंगे जब तुम इस खोटे धन्धे को छोड़ने का वचन दोगे।' वह बोला, ' महाराज, यह धन्धा तो मेरे बाप-दादा करते आए हैं, यह कैसे छूट सकेगा? ' इसपर नानक जी बोले, 'अच्छा! तुम हमें तीन वचन दो। पहला–सच बोलना; दूसरा–जिसका नमक खाना उसका बुरा न करना; तीसरा–दीन-दुखियों को न सताना।'

भूमिया ने नानक जी के पांव पकड़कर प्रतिज्ञा कर ली। तब उसका भोजन पाकर नानक जी पांच दिन वहां रहकर चल दिए। जब मनुष्य के अच्छे भाग्य होते हैं, तभी सन्तों का मेल होता है।

नानक जी के जाने के बाद भूमिया एक दिन राजा

के घर चोरी करने गया। दरबान ने पूछा, 'क्या काम है?' उसने तो सच बोलने का वचन दिया था, वह ठिठक गया। फिर मन को कड़ा करके बोला, 'भाई मैं चोर हूं!' दरबान ने सोचा कि कभी कोई चोर भी अपने को चोर कहता है! यह कोई राजा का मिलने-जुलनेवाला होगा। उसने उसको भीतर जाने दिया।

भूमिया ने भीतर जाकर हीरे, मोती और बहुमूल्य वस्तुएं इकट्ठी करके बांध लीं। जब चलने लगा तो सोने के पात्र में पड़े नमक को उसका हाथ लग गया। घबराहट में उसने नमक वाले हाथ को जिह्वा पर लगा लिया। उसने सोचा—ओफ! मैंने तो गुरुदेव को वचन दिया हुआ हैः 'जिसका नमक खाना उसका बुरा न करना।' वह सब सामान छोड़कर खाली हाथ लौट गया।

अगले दिन प्रातःकाल राजा उठा तो उसने देखा कि हीरे-मोतियों आदि की गठरी बंधी पड़ी है, पर एक तिनका भी राजमहल से बाहर नहीं गया। वह आश्चर्य-सागर में डूब गया। उसने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो हमारे घर में आया, हमसे मिले। हम उसे भरपूर पारितोषिक देंगे। इस पर भी चोर का कोई पता न चला। अन्त में राजा ने नगर के सब गुण्डों और बेकार आदमियों को पकड़वाकर खूब मारा-पीटा।

इस तरह लोगों को पिटते देख भूमिया ने सोचा कि मेरे कारण ही ये लोग मारे जा रहे हैं। मुझे गुरुदेव को दिए तीसरे वचन का पालन करना चाहिए। राजा की सेवा में पहुंचा और सच-सच बना दिया। राजा ने उसे अपना मंत्री बना लिया। सन्त की संगति से एक डाकू का जीवन बदल गया। कहां तो वह दिन-रात छिपता फिरता था और अब जहां जाता, लोग झुक-झुककर प्रणाम करते।

एक दिन भूमिया मन्त्री ने राजा से कहा, 'महाराज! एक धर्मशाला बनवाइए, जिसमें रात-दिन भोज भंडारा चलता रहे। साधु-सन्त, यात्री और दरिद्रों को हर समय भोजन मिले। हर समय भगवान के यश का गान होता रहे।' राजा ने उसकी बात मान ली। इस तरह उस राजा का भी जीवन पलट गया। राजा और प्रजा दिन-रात सत्संग का आनन्द लूटने लगे।

संस्कारी बालक

सत्गुरु नानकदेव जी भूले-भटके लोगों को धर्म का मार्ग बताते हुए एक नगर में पहुंचे। स्त्री, पुरुष, बालक सभी

दर्शनों को उमड़ पड़े। दिन-भर सत्संग और कीर्तन होता। नानक जी ने देखा कि एक सात वर्ष की आयु का बालक प्रतिदिन सत्संग में सबसे पहले आता है और अन्त में जाता है। नानक जी ने भरे सत्संग में उसे अपने पास बुलाया और पूछा, 'पुत्र! तेरे तो अभी खेलने - कूदने के दिन हैं, तू इतने सवेरे उठकर कैसे आ जाता है?' उसने दोनों हाथ जोड़कर कहा, 'महात्मा जी, एक दिन माता ने मुझे अग्नि जलाने को कहा। मैंने उसकी आज्ञा मान छोटी लकड़ियां नीचे और बड़ी लकड़ियां ऊपर जोड़कर आग लगाई। मैंने देखा कि छोटी लकड़ियों को शीघ्र ही अग्नि लग गई। मैंने सोचा कि यदि इस छोटी आयु में ही मेरी मृत्यु हो जाए, तो मैं भजन कैसे करूंगा। इस कारण मैं सब कुछ छोड़-छाड़कर आपका सत्संग सुनने आता हूं।'

उस बालक के वचन सुन सभी लोगों के हृदय पर गहरी चोट लगी। नानक जी ने उसे हृदय से लगाया और वचन किया—

जो उपजिया सो विनसिया, परो आज कि काल।
नानक हर गुण गाय लै, छौड़ सकल जंजाल॥

यहां से चलकर आप एक महात्मा की कुटिया पर पहुंचे। वह बड़ी श्रद्धा से अपने गुरु का नाम जप रहा था, तो नानक जी ने प्रवचन किया:

एको सिमरो नानका, जो जल, थल रहो समाय।
दूसरा क्यों सिमरिये, जो जन्मे और मर जाय॥

नानक जी ने उसे समझाया, 'भाई! उस एकमात्र प्रभु को सिमरो, जो जल और थल में समा रहा है। किसी दूसरे शरीरधारी, जन्मने और मरनेवाले का नाम नहीं जपना चाहिए।'

उस महात्मा ने सच्चे गुरु नानकदेव जी के उपदेश को सिर-माथे चढ़ाया और सच्चे पिता का नाम जपने लग गया। उसने नानक जी और उनके साथियों का बड़ा आदर किया और भोजन कराया। रात्रि को भी अपने पास ही रखा।

अगले दिन प्रातःकाल जब वह महात्मा स्नान आदि करने गया था, तो नानक जी ने उसकी खाट तोड़ दी और झोपड़ी में आग लगा दी। इसपर मरदाना बड़ा विस्मित हुआ और पूछने लगा, 'महाराज! यह सब मेरी समझ में नहीं आया कि जिन महात्मा ने आपकी सेवा की, आपने उनका सामान नष्ट कर दिया और इससे पहले आप एक दुष्ट को वर देकर आए हैं कि तुम फूलो और फलो।'

नानक जी हंसकर बोलेः

'भाई मरदाना! यह तो एक सच्चा महात्मा है, इसके सामान को मैंने इसलिए नष्ट किया है कि यह इन वस्तुओं

के मोह में पड़ा हुआ था। यह जहां भी जाएगा, लोगों का कल्याण करेगा। भाई ! भगवान जिसे अपनी ओर खींचना चाहते हैं उसका धन, सम्पत्ति, परिवार आदि सब छीन लेते हैं। कारण यह है कि जब तक प्राणी इनमें रमा रहता है, वह भगवान की ओर नहीं चल पाता।

'अब सुनो उस दुष्ट के वरदान की बात। वह जहां भी जाएगा, लोगों को दुःख ही देगा, इसलिए उसे संसार की सम्पत्ति में लिपटा दिया।'

गुरु नानकदेव जी के पवित्र वचन सुनकर मरदाना ने उनके चरण पकड़ लिए।

चलते-चलते गुरु नानकदेव जी हारूं देश में आ विराजे। यहां एक जोगी रहता था, जो कहता था कि भगवान नहीं है। वह जोगी मंत्रों-जंत्रों के बल से वहां के लोगों की सभी कामनाएं पूरी कर देता था। लोग और राजा उसीकी पूजा करते थे।

बरसात के दिन थे, पर एक बूंद भी वर्षा न हुई। उस जोगी ने बहुतेरे मंत्र-जंत्र चलाए, परन्तु वर्षा न हुई। वहां का राजा और बड़े-बड़े लोग इकट्ठे होकर नानक जी की शरण में आए। गुरुदेव बोले, 'वर्षा होगी, परन्तु भगवान का भजन करो। प्रभु के आगे प्रार्थना करो। प्रसाद तैयार कराओ।'

अब क्या था, एक ओर तो भगवान का भजन और सत्संग-रूपी गंगा बहने लगी और दूसरी ओर प्रसाद बनने लगा। लोगों की प्रसन्नता का पार न रहा क्योंकि प्रसाद तैयार होते-होते ऐसी घनघोर वर्षा हुई कि जल-थल एक हो गया।

गुरु नानकदेव जी हारूं देश के वासियों का कल्याण कर काबुल में आ विराजे। इन दिनों बाबर भारतवर्ष पर चढ़ाई की तैयारी कर रहा था। गुरुनानकदेव का यश उसके कानों तक भी पहुंच चुका था। उसने बड़े आदर से उन्हें दरबार में बुलाया और शराब का प्याला भेंट किया।

नानक जी बोले, 'हमने तो वह शराब पी रखी है जिसका नशा कभी उतरता ही नहीं। यह शराब किस काम की, जिसका नशा थोड़ी देर में उतर जाए।'

बाबर उनके चरणों में गिर पड़ा। गुरुदेव बोले 'तुम्हारा राज्य भारत में होगा। परन्तु यह तभी तक चलेगा जब तक तुम्हारे वंशज भारतवासियों को अपना समझेंगे।'

गुरु नानकदेव जी यहां से चल पड़े। चलते-चलते मार्ग में ही खुरमा नगर में मरदाना की मृत्यु हो गई। वह था तो मुसलमान, लेकिन उसकी इच्छा थी कि उसके मृत शरीर को जलाया जाए, दबाया न जाए इसलिए गुरु नानक जी ने उसकी इच्छानुसार उसका शरीर अग्निदेव की भेंट कर दिया।

गुरु अंगददेव

गुरु नानकदेव जी यात्राएं समाप्त कर करतारपुर में आ विराजे। यहां पर सहस्त्रों लोग उनके दर्शन करने आते और अपना जन्म सफल करते। एक दिन गांव खडूर से भाई लहणा भी अपने साथियों सहित दर्शन करने आया। गुरु जी ने देखा कि यह प्रभु का सच्चा भक्त है। इससे कोई बड़ा कार्य होगा।

गुरु नानकदेव जी ने एक दिन उपदेश में कहा, 'मधुर बोलना, हितकारक वचन बोलना, जो बात जैसी है उसको वैसे ही कहना—यदि हमारी बात में ये तीनों गुण हैं, तभी यह सत्य कहलाएगी। इस तरह सच्चाई का जीवन बिताते हुए धन कमाएं। तभी यह जीवन सफल होगा।'

इन्हीं दिनों बारी-बारी से गुरु जी के पिता और फिर माता का देहान्त हो गया। गुरु नानकदेव जी ने रावी नदी के तट पर दोनों का दाह-संस्कार अपने हाथों से किया और उनकी सब सम्पत्ति अपने पुत्रों में बांट दी।

भाई लहणा दिन-रात गुरु जी की सेवा करते। वर्षा हो, आंधी हो, वे आधी रात में उठते। अपने कन्धों पर उठा-उठाकर बीसियों घड़े पवित्र जल के गुरुदेव के स्नान के लिए लाते।

एक दिन परीक्षा लेने के लिए गुरु नानकदेव जी ने, अमावस की घोर अंधेरी रात में, जब हाथ को हाथ नहीं सूझता था, अपने छोटे पुत्र लक्ष्मीदास को बुलाया और कहा, 'पुत्र! यह वस्त्र नदी में धो लाओ।' वह बोला, 'इतनी जल्दी क्या पड़ी है, दिन निकलने पर धो लेंगे।' फिर उन्होंने अपने बड़े पुत्र श्रीचन्द को कहा तो उसने भी आनाकानी की। अन्त में उन्होंने भाई लहणा को बुलाकर कहा। वह 'सत्य वचन' कहकर वस्त्र लेकर चल पड़ा। थोड़ी देर में ही वह वस्त्र धोकर ले आया।

कुछ दिनों बाद गुरु जी अपने पुत्रों और भाई लहणा के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक गंदा नाला पड़ा। गुरु जी का कटोरा उसमें गिर गया। उन्होंने बड़े पुत्र श्रीचन्द से कहा, 'पुत्र ! कटोरा निकालो।' वह बोला, ऐसे गंदे पानी में क्यों जाएं? क्या कटोरों की कमी है। और कटोरा मोल ले लेगें।' अब उन्होंने अपने छोटे पुत्र से कहा। वह बोला, 'किसी आते-जाते से निकलवा लेंगे।'

अब गुरु जी ने भाई लहणा को कहा। वह झट गंदे जल में कूद पड़ा और कटोरा निकाल लाया, परन्तु कीचड़ से लथपथ हो गया। गुरु जी उसकी भक्ति पर लट्टू हो गए। वह सब परीक्षाओं में पूरा उतरा।

17 आषाढ़ सम्वत् 1596 में प्रातःकाल को गुरु नानकदेव जी ने सब संगत के सामने पांच पैसे और नारियल भाई लहणा को भेंट किया और उसे अंगददेव नाम देकर अपने स्थान पर बिठा दिया।

इसपर गुरु जी की पत्नी और पुत्र बहुत बिगड़े परन्तु उन्होंने कहा, 'यह स्थान योग्य पुरुष को ही मिलना चाहिए।'

दीप बुझ गया

उन दिनों प्रतिदिन करतारपुर में सत्संग होता था। पिछली रात 'आसा की वार' का पाठ होता था। गुरु नानकदेव जी की पवित्र वाणी सुनने के लिए दूर-दूर से सहस्रों यात्री आते। दोनों समय लंगर चलता। सभी संगत भोजन और भजन का आनन्द लूटती। अब आप बूढ़े हो गए थे। आप 70 वर्ष की आयु को पार कर चुके थे।

आश्विन सुदी सप्तमी, सम्वत् 1596 के दिन गुरु जी ने सेवादारों से कहा कि गोबर से भूमि को लीपो और सब सामग्री इकट्ठी करो। अपने सत्संगियों को बताया कि दशमी के दिन हम यह शरीर छोड़ देंगे।

अब क्या था। दूर-दूर से हिन्दू-मुसलमान आ-आकर इकट्ठे होने लगे। दशमी के दिन 22 सितम्बर सन् 1539 के प्रातःकाल को गुरु नानकदेव जी स्नान कर शुद्ध भूमि पर पद्मासन लगाकर बैठ गए। आपका अन्त समय देख भक्तमंडली की आंखों में आंसू भर आए। आपने वचन दिया–

चिंता ताकी कीजिए, जो अनहोनी होय।
यह मारग संसार में, नानक थिर नहीं कोय॥

आपने अन्तिम उपदेश दिया–'भाइयो! रोग, बुढ़ापा और मृत्यु छाया की तरह शरीर के साथ लगे हैं। उस समय की भयानकता को सोचो, जब शरीर कांपने लगता है, इन्द्रियां काम नहीं देतीं, दांत झड़ जाते हैं, भोजन नहीं खाया जाता और घर का छोटा-बड़ा बात भी नहीं पूछता। उस विपत्ति के समय भजन और जाप का अभ्यासी ही परम पिता की कृपा का भागी होता है। याद रखो! यह तभी बनेगा जब इसका अभ्यास आज से ही शुरू कर दोगे।'

अब गुरु नानकदेव जी ने अपने और संगत के बीच परदा डाल दिया।

'तेरा भाणा मीठा लागे' इस शब्द को कहते-कहते आप भगवान के ध्यान में अपनी सुध-बुध खो गए और आपने शरीर छोड़ दिया।

आपकी मृत्यु पर हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हो गया। हिन्दू कहते—हम अपनी धार्मिक रीति के अनुसार इनका शरीर जलाएंगे—मुसलमान कहते—हम इसे भूमि में गाड़ेंगे। झगड़ते-झगड़ते जब ये लोग परदे के भीतर गए तो चादर के सिवाय और कुछ न था। सबने मिलकर गुरुनानकदेव जी की जय-जयकार बुलाई और उनके गुणों का वर्णन करने लगे।

आधी चादर का हिन्दुओं ने अग्नि संस्कार कर दिया और मुसलमानों ने अपने धर्म की रीति के अनुसार आधी चादर को भूमि में गाड़ दिया।

इस तरह इस महापुरुष गुरु नानकदेव ने संसार में धर्म का डंका बजाया। लोगों को धर्म का सच्चा रास्ता बताते हुए अन्त में वे शरीर छोड़ते समय भी हिन्दू और मुसलमानों को एकता का पाठ पढ़ा गए।

इस महान पुरुष की पवित्र वाणी 'गुरु ग्रन्थसाहब' में लिखी हुई है, जिसका पाठ भारत के लाखों नर-नारी प्रतिदिन करते हैं और उस महात्मा को श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

❑❑❑

सरल प्रेरणादायक जीवनियां

मेरा बचपन	महाराणा प्रताप	महापुरुषों का बचपन
झांसी की रानी	चाणक्य	वीर पुत्रियां
रवीन्द्रनाथ टैगोर	लोकमान्य तिलक	लालबहादुर शास्त्री
लाला लाजपतराय	श्रीकृष्ण	आदर्श बालक
सरदार पटेल	स्वामी विवेकानन्द	आदर्श देवियां
डॉ. राजेन्द्रप्रसाद	गोस्वामी तुलसीदास	सच्ची देवियां
विनोबा भावे	हमारे राष्ट्रनिर्माता	भारत के महान् ऋषि
जवाहरलाल नेहरू	मीराबाई	गौतम बुद्ध
महात्मा गांधी	गुरु तेगबहादुर	सम्राट् अशोक
चन्द्रशेखर आज़ाद	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	वीर हनुमान
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	सरदार भगतसिंह	हमारे स्वामी
गुरु नानकदेव	स्वामी रामतीर्थ	श्री अरविन्द
सुभाषचन्द्र बोस	गुरु गोविन्द सिंह	वीर सावरकर
शिवाजी	सदाचारी बच्चे	साहसी बालक

शिक्षा भारती
कश्मीरी गेट • दिल्ली

ISBN 81-7483-052-9
9788174830524

₹ 30/-